P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शहज़ाद राय शोध संस्थान में संग्रहीत प्राचीन भारतीय मुद्राएं

अभिजीत कुमार सिन्हा
शोध छात्र,
चित्रकला विभाग,
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट,
दयालबाग़, आगरा

सारांश

बड़ौत, पश्चिमी उत्तर प्रदेश का एक ऐतिहासिक शहर है बड़ौत पालिका परिषद व बड़ौत की स्थापना 1970 में हुई थी। बड़ौत जिला में शहजाद राय शोध संस्थान स्थित है जिसकी स्थापना वर्ष सन् 1996 ई0 में जिला बड़ौत जनपद उत्तर प्रदेश, भारत में हुआ। शहजाद राय शोध संस्थान में संग्रहीत प्राचीन पुरासम्राग्रीयों का संग्रह व शोध परक विभिन्न प्रकार के भारतीय विश्व धरोहर वस्तुओं का अमूल्य संग्रह है। जो समय–समय पर शोध छात्र–छात्राओं के लिए उपलब्ध प्रदान करायी जाती है। संस्थान के निजी संग्रह में भारत की दुर्लभ प्राचीन मुद्राएं लगभग 16 हजार, प्राचीन पाण्डुलिपियों, विश्व की नायाब लधुचित्र शैली की पाण्डुलिपियों समेत अन्य ऐतिहासिक वस्तुएं उपलब्ध हैं।

संस्थान में संग्रहीत प्राचीन सभ्यताओं की पुरासम्राग्री–पुरापषाण कालीन पुरासम्राग्री, उत्तर पाषाण कालीन औजार एवं पुरासम्राग्री, ताम्र धातु काल, लौह काल, हड़प्पा काल, मृणमय अभिलेख, काष्ठ फलक, ताम्र पत्र व ताम्र फलक अभिलेख, प्राचीन मुद्रायें एवं मैडलों का संग्रह संग्रहीत हैं।

मुख्य शब्द : संग्रह, मुद्रा, कला तत्व, अग्रभाग, पृष्ठभाग।

प्रस्तावना

बाल्यकाल से ही अपने देश में चलने वाले मुद्राओं और करेंसी नोटों को अच्छी तरह से पहचानते है। इन्हें पैसा और रुपया कहते है। इसका प्रयोग विनयम के लिए होता है। प्राचीन काल से ही इसके प्रचलन को देखते हैं। इसके रूप में भी कलात्मक परिवर्तन को देखते हैं। जो हमारे भारतीय सांस्कृतिक, आर्थिक, भूगौलिक व ऐतिहासिक परिचय का द्योतक है। ऋग्वेद की एक ऋचा (दोहे) में उल्लेखित–

।। क इमं दशभिर्मम इन्द्रं क्रीणाति धेनुभि।।

अर्थात् इंद्र की एक मूर्ति का मूल्य, जिसे एक ऋषि का मूल्य, जिसे एक ऋषि बेचना चाहते थे, दस गाय बताया गया है। वैदिक साहित्य में कुछ अन्य शब्द जैसे नीष्क, शतमान आदि की चर्चा हुई है जिसे कुछ लोग मुद्राओं के रूप में अनुमान करते है।

शहजाद राय शोध संस्थान के निदेशक श्री अमित राय जैन से वार्ता के दौरान उनसे पता चला की मुद्राओं के अपने मौलिक गुणों के कारण ही उसका सांस्कृतिक एवं कलात्मक महत्त्व है अतः मैंने शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत (उ०प्र०) में संग्रहीत मुद्राओं को देखने का मन बनाया और वहाँ पर मैंने पाया कि हर राजवंश की मुद्राओं की अलग–अलग विशेषतायें है और उन मुद्राओं का एक कलात्मक पक्ष भी है। इसी प्रकार तकनीकी पक्ष भी इनका बदलता रहा है। मैंने अपने विषय में ''मौर्य राजवंश से गुप्त राजवंश'' तक की मुद्राओं को ही लेते हुए उनके सांस्कृतिक एवं कलात्मक पक्ष को प्रस्तुत करने का विचार बनाया है। जिसके अन्तर्गत कुछ मुद्राओं में स्पष्ट रूप देखने को मिले है। उदाहरण– गुप्तकाल की कला के उत्कृष्ट नमूने तत्कालीन सोने के मुद्राओं में उत्कीर्ण आकृतियों में भी मिलते है। इस काल की कला में स्थूल शारीरिक एवं मांसल सौन्दर्य अपनी चरमावस्था को पहुँचा। इसी प्रकार गुप्तकाल में अलकंरण सज्जा मुद्राओं का शास्त्रीय ढंग से चित्रण, आत्मा का आह्लादपूर्ण सौन्दर्य, शान्तिस्थ प्रकृति के हर्ष–अर्मष आदि की अभिव्यक्ति में भारतीय कला अपनी प्रौढ़ावस्था को पहुँची।

साहित्यावलोकन

मुद्राशास्त्र एक विज्ञान है। इसके ज्ञान से ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथ्यों का निर्माण होता है। अंग्रेजी के न्यूमिस्मेटिक्स (Numismatics) शब्द की उत्पत्ति

ग्रीक नोमोस (Nomos) व लेटिन न्यूमिस्म (Numisma) से हुई है। प्राचीन साहित्य में उसे ''मुद्रा'' कहा गया है। अंग्रेजी में उसे ''कॉएन'' (Coin) कहते है। जो फ्रेंच भाषा के शब्द ''कॉएन'' (Coygen) से बना है। भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और कला सम्बन्धी जानकारी के लिए प्राचीन मुद्राऐं बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं।[1]

भारत की सबसे प्राचीन मुद्राएँ चाँदी की बनी है। इन्हें हम ''आहत'' या अंग्रेजी में 'पंचमाकर्ड सिक्का'' (Punch Marked Coin) कहते है इन्हें ये नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि इन मुद्राओं पर अलग–अलग उत्कीर्ण चिन्ह (Symbol), अलग–अलग ठप्पों (Punch) से ठोके गये है। विद्वानों के अनुसार भारत में आहत मुद्राओं की शुरूआत, छठीं शताब्दी ईसा पूर्व में हुई जबकि कुछ विद्वान इसे पाँचवी शताब्दी ईसा पूर्व में रखते है और कुछ अन्य इसकी शुरूआत और पूर्व से मानते है।[2]

भारत में प्राचीन मुद्राओं पर महत्वपूर्ण ग्रन्थ सर्वप्रथम 1891 में अलेक्जेण्डर कनिंधम महोदय ने प्रकाशित किया था। भारतीय सिक्के एक ऐतिहासिक परिचय, अमितेश्वर झा, COINS, प्रमेश्वरी लाल गुप्त, Ancient India Coins Revisited, Pieper Wilfried,The Silver Damma by A.M.fishman & I.J.Todd, Imperial Punch-Marked Coins of Ancient India by Savita Sharma, Punch-Marked Coins of Early Historic India by Dilip Rajgor,द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का गहन अध्ययन किया व कला सामग्री व मुद्राओं से सम्बन्धित जानकारी एकत्रित करने के लिए मैंने भारतीय कला भवन, वाराणसी (उ०प्र०), मथुरा संग्रहालय, मथुरा (उ०प्र०),आगरा पुरातत्व संग्रहालय, आगरा (उ०प्र०), राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली, वृन्दावन अनुसंधान संस्थान (उ०प्र०) आदि संस्थानों का भ्रमण किया।

परिकल्पना

मैंने इस विषय पर शोध करने के उद्देश्य से शोध परिकल्पना कर अपना शोध कार्य आरम्भ किया। जिसके की मैं शोध के केन्द्र बिन्दु तक पहुँच कर और अपने शोध कार्य को पूर्ण कर पाऊँ। मैं मुद्राओं पर बनी उन रूपों या उत्कीर्ण रिलिफ (Low &High) के प्रति अत्यधिक प्रभावित था वास्तव में एक कलात्मक रूप लिए हुए थे। हर राजवंश की मुद्राओं में उन रूपों का बाहरी, आन्तरिक परिवर्तन भी देखा। एक ही विषय के प्रतिक चिन्ह मिले और बदलते रहे ऐसा भी पाया। अतः मैंने उन रूपों की सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन करने की परिकल्पना तैयार की।

अध्ययन का उद्देश्य

मुद्रायें किसी भी राजवंश या देश की आर्थिक स्थिति के परिचायक होते है। इस तंत्र के आधार पर ही सांस्कृतिक का विकास होता, सांस्कृतिक संरक्षण होता है। संस्कृति एक माणक के रूप उभर कर आती है। अतः इस संग्रहालय में संग्रहीत हजारों मुद्राओं जो अभी तक अप्रकाशित रह गये है। उनकों में उत्कृष्ट दृष्टि से गहन अध्ययन करना चाहता हूँ क्योंकि मैं मूर्तिकला का विद्यार्थी रहा हूँ अतः इन मुद्राओं में उन मूर्ति तत्वों की भी खोज करना चाहता हूँ जिससे मुद्राएं कलात्मक पक्ष सिरमोड़ (सर्वोकृष्ट) माने जाते है। इनमें बने विविध रूपों, संयोजन एवं प्रस्तुतीकरण का अध्ययन अभी तक निकहम कारणों से नहीं हो पाया है। मैं कला विद्यार्थी होने के नाते अपना यह दायित्व समझता हूँ प्रस्तुत शोध में समाहित किया जाए। जिससे शोध का महत्व और अधिक उजागर होगा।

1. मुद्राओं के परिवर्तित स्वरूप और उनके सांस्कृतिक विकास का अध्ययन।
2. मुद्राओं पर उत्कीर्ण रूपों और विषयों का अध्ययन।
3. मुद्राओं पर उत्कीर्ण कला रूपों को कला तत्वों के आधार पर विवेचना करना।
4. विभिन्न राजवंशों के परिवर्तित कलात्मक रूपों का तुलनात्मक अध्ययन।
5. मुद्राओं के बदलते धातु व तकनीकी पक्ष का अध्ययन।

कार्य प्रणाली

अनुसंधान अभिकल्प

अपने पूर्वालोकन के आधार पर अपने शोध–विषय की रूपरेखा तैयार की।

साधन–प्राथमिक और द्वितीय

प्राथमिक साधन

वास्तविक मुद्राएं, शोध संस्थान, बड़ौत (उ०प्र०) से प्राप्त।

द्वितीय साधन

लेख,पुस्तकें, प्रकाशित शोध–पत्रिकायें, संग्रहालय, समाचार–पत्र, सूची–पत्र, बेब साइट इत्यादि।

प्रदत्त

विद्वानों से साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त विचारों का संकलन एवं अध्ययन।

सीमा

मैंने ''मौर्य राजवंश से गुप्त राजवंश'' तक की मुद्राओं को लिया है जो शहजाद राय शोध–संस्थान, बड़ौत, (उ० प्र०) में एक प्रसिद्ध शोध संस्थान में संग्रहीत है यह संस्थान शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत (उ०प्र०) के नाम से प्रसिद्ध है।

भारतीय प्राचीन मुद्राओं का उद्भव और विकास

बाल्यकाल से ही अपने देश में चलने वाले मुद्राओं और करेंसी नोटों को हम सभी अच्छी तरह से पहचानते है। इन्हें पैसा और रुपया कहते हैं। इनका प्रयोग विनिमय के लिए होता है। प्राचीन काल से ही इसके प्रचलन को तथा रुपों में कलात्मक परिवर्तन को देखते हैं जो हमारे भारतीय सांस्कृतिक, आर्थिक, भूगोलिक व ऐतिहासिक परिचय का द्योतक है। भारत में मुद्राओं के उद्भव की कहानी मानव सभ्यता के विकास के साथ जुड़ी हुई है। मनुष्य के क्रमिक बौद्धिक विकास से ही मुद्राओं का जन्म हुआ है। इस विकास–क्रम के प्रमुख अवस्था इस प्रकार है–

वस्तुओं के परस्पर परिवर्तन की स्थिति के रूप

प्रागैतिहासिक काल में मानव जीवन की शुरुआत गुफाओं अथवा जंगलों व वृक्षों के नीचे रहते थे। इनका जीवन कन्दमूल–फल (वनस्पति) खाकर अथवा आखेट द्वारा अपना जीविकोपार्जन करते थे। उस काल में उनकी आवश्यकताएं बहुत सीमित थीं। इस कारण वस्तुओं का खरीदने का कोई प्रयोजन नहीं होता था। आवश्यकता

पड़ने पर आपस में वस्तुओं की आदान–प्रदान कर लेते थे। उदाहरण स्वरूप चमड़े के बदले पत्थर के औजार दूसरे को देकर उससे चमड़ा प्राप्त कर लेता था। इनकी प्राथमिक स्थिति भोजन को इकट्ठा करना था। इस प्रचलन में वस्तुओं के परस्पर परिवर्तन की यह प्रथा मुद्रा के उद्भव का प्रथम चरण थी।

बार्टर पद्धति के रूप

आध–ऐतिहासिक काल में मानव जीवन पहाड़ और जंगल छोड़कर कच्चे मकान, कुटियाँ (झोपड़ी) बनाकर रहने लगे। आखेट द्वारा भोजन उपलब्ध के स्थान पर लोगों ने कृषि को अपनाया व प'ुपालन भी करने लगे। आध ऐतिहासिक युग में यह स्थिति अन्य पैदा करने की हो गयी। अब मनुष्य की आवश्यकताएं पहले की अपेक्षा बढ़ गयी थीं। यदि किसी व्यक्ति के पास बड़ा बैल है और उसे कुछ पत्थर के औजारों की आवश्यकता है तो बैल और पत्थर के औजारों की आदान–प्रदान में कठिनाई आने लगी। अतः सुनि'चित किया गया कि कोई ऐसी वस्तु हो जिसको मूल्य की इकाई (माध्यम) मान लिया जाये। गाय को इस इकाई के रूप में प्रथम मान्यता प्रदान की गई। जरूरत के हिसाब से भेड़, बकरी, अनाज, चमड़ा, पत्थर के औजार आदि को विनिमय में माध्यम बनाते थे। इस प्रकार वस्तुओं को क्रय करने का स्वरूप बार्टर पद्धति[3] कहलाता है। वर्तमान समय में आज भी किसान अनाज देकर अन्य आव'यक वस्तुओं का आदान–प्रदान करते हैं। यह प्रचलन मुद्राओं के उद्भव की दि'ाा में विकास का द्वितीय चरण था।

वैदिक काल में आर्यों का मुख्य व्यवसाय कृषि और प'ुपालन था। प्राचीन वैदिक साहित्य में वस्तुओं के परिवर्तन के उल्लेख अनेक रूपों में प्राप्त होते हैं। जो इस प्रकार हैं– उस समय गाय को विनिमय का माध्यम बना दिया गया।

ऋग्वेद (4.24.10)–में इन्द्र की एक प्रतिमा को दस गायों के मूल्य से अधिक मूल्यवान बताया है।

ऋग्वेद (8.32.20)–में गायों द्वारा सोम खरीदने का उल्लेख है।

रामायण (1.16.13)–में यह उल्लेख मिलता है कि शुनः शेप को उसके पिता ने सौ गाय प्राप्त कर राजा अम्बरीष को बेचा था। जब यज्ञ में बलि के निमित्त कोई व्यक्ति शुनः शेप को यूप (खूँटा) से बाँधने को तैयार नहीं हुआ तो पिता ने सौ गाय प्राप्त कर पुत्र को यूप से बांधना स्वीकार किया। उसके बाद सौ गाय और पाकर वह वध हेतु भी तैयार हुआ।

ऐतरेय ब्राह्मण (7.23.6.; 8.37.7; 8.39.8)–में ब्राह्मणों को और पुरोहितों को दक्षिणा में भी गायें दी जाती थीं।

ऐतरेय ब्राह्मण (5.22.9)–में गाय को संपत्ति, सुख एवं समृद्धि का स्त्रोत बतलाया गया है।

वैदिक साहितय में वर्णित है कि किसी व्यक्ति की स्मृद्धि मापने का माध्यम गायों की संख्या थी। जिसके पास अधिक गायें थी वह अधिक समृद्ध माना जाता था। इस प्रकार से वस्तुओं के खरीदने के लिए गाय माध्यम बनीं। भारत की इस प्रथा का अनुपालन यूनान में भी बैल को मूल्य की इकाई के माध्यम रूप में मान लिया गया। पुराने यूनानी मुद्राओं का नाम ऑक्सन था; उन पर बैल की आकृति बना दी जाती थी।

आदान–प्रदान की प्रथा में बार्टर पद्धति बहुत समय तक प्रचलित रही। ई0पू0 पाँचवी शती तक गाय मूल्य का माध्यम मानी जाती रहीं। पाणिनि की अष्टाध्यायी में भी गाय द्वारा विनिमय करने के उल्लेख मिलते हैं।[4]

धातु प्रयोग का विनिमय रूप

मुद्राओं के उद्भव–क्रम की तृतीय चरण में वस्तुओं के क्रय–विक्रय हेतु धातुओं को माध्यम माना गया। ये धातुयें मुख्यतः सोना, चाँदी, ताँबा, सीसा, टिन आदि थे। धातुओं के टुकड़े को वजन के अनुसार इनके माध्यम से आदान–प्रदान सुविधापूर्ण था। भारत के अलावा मिश्र और मेसोपोटामिया में भी इस प्रकार की धातुओं का प्रचार हुआ। इन धातुओं की वजन के लिये तराजू और बाँटों का आविष्कार मिश्र और भारत में अन्य दे'ाों की अपेक्षा अधिक प्राचीन माना जाता है।

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के उत्खनन में उक्त धातुओं के बहुत से गहने प्राप्त हुए हैं, परन्तु मुद्राऐं नहीं प्राप्त हुए अर्थात् ई0पू0 तीसरी और दूसरी सहस्त्राब्दी में धातु के मुद्राओं का निर्माण नहीं होता था। हड़प्पा संस्कृति की समकालीन तथा परवर्ती सभ्यताओं में लगभग ई.पू. छठी शती तक मुद्राओं को प्राप्त नहीं हुई। अतः मुद्राशास्त्रियों का मत है कि बुद्ध के पूर्व तक वास्तविक मुद्राओं का प्रचलन नहीं था।

डॉ. डी.आर. भण्डाकर के मतानुसार

वैदिक साहित्य में कुछ ऐसे नाम का वर्णन मिलता हो मुद्रा के समतुल्य (बराबर) माना है उदाहरण स्वरूप–निष्क, कृष्णल, सुवर्ण, शतमान आदि।[5]

ऋग्वेद (1.162.2; 10.2.20; 5.53.4; 5.54.11)–में निष्क आदि प्रयोग आभूषणों के रूपा हुआ है। ऋग्वेद के अनुसार गले में जो आभूषण पहना जाता था वह 'निष्क' कहलाता था। उसे ग्रैवेयक भी कहते हैं। ऋग्वेद में उसे 'निष्कग्रीव' कहा गया है।

शतपथ ब्राह्मण (13.4; 1.8)–में निष्क धारण करने वाले पुरुष को 'निष्की' तथा स्त्रियों को 'निष्कनी' कहा गया है।

इससे यह पता चलता है कि वैदिक समाज में निष्क सभी आभूषणों में सर्वाधिक मूल्यवान था।

सुरेन्द्र कुमार चक्रवर्ती के मतानुसार

निष्क का विनिमय में प्रयोग आभूषण तथा धातु पिण्ड दोनों रूपों में होता था। इसे विनिमय के माध्यम रूप में उपयोग होता था।

निष्क की धातु–पिण्ड के रूप में वजन व शुद्धता सुनिश्चित हेतु परख इस प्रकार है एक निष्क को 320 स्त्री, अर्ध निष्क 160 स्त्री और पाद निष्क 80 रत्ती के बराबर वजन वाले बतलाये गये हैं। स्वर्ण के अलावा रजत के निष्क भी बनते थे जिन्हें 'रयि' कहा गया है।

कृष्णल शब्द परवर्ती वैदिक साहित्य में इसका वर्णन मिलता है। बस्ती जिला (उत्तर प्रदेश) में पिपरहवा नामक स्वथान में खुदाई से प्राप्त एक मंजूषा में बुद्ध के

अवशेष मिले थे जिससे सोने के छोटे टुकड़े (कृष्णल) प्राप्त हुए थे।[6]

तैत्तिरीय ब्राह्मण (1,3.6.7)–में यह उल्लेख है कि राजसूय यज्ञ के समय रथ दौड़ में भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के पुरस्कार रूप में एक–एक 'कृष्णल' दिया गया था। यह निष्क से छोटा धातु का टुकड़ा होता था।

धातु के टुकड़े को परवर्ती वैदिक साहित्य में सुवर्ण और शतमान नामक हिरण्यक–पिण्डों का उल्लेख मिलता है। शुक्ल यजुवेद, शतपथ ब्राह्मण आदि ग्रंथों में भी 'शतमान' का उल्लेख हुआ है। धातु के इन टुकड़ों की वजन 'गुंजा' नामक बीज से वनज कर निर्धारित की जाती थी। इस बीच का वजन एक रत्ती के बराबर है। इन टुकड़ों की वजन निर्धारित हो जाने से लोगों को दैनिक जीवन व व्यापार में सुविधा प्रदान हुई।[7]

मुद्राओं का उद्भव रूप

चतुर्थ चरण में धातुओं के मुद्राएं बनाये जाने लगे जबकि तृतीय चरण में धातु के केवल टुकड़े बनाये जाते थे। उन पर किसी प्रकार रूप, चिन्ह अंकित नहीं मिलते थे। वास्तविक मुद्राओं पर चिन्हों का होना, उनकी वजन निश्चित रहती थी। मुद्राओं की वजन व शुद्धता के विश्वास के लिए सम्मानित व्यक्तियों की मुहर लगा दी जाती थी। कनिंघम का कहना है ''कि भारत में मुद्राओं का निर्माण कम–से–कम एक हजार ई. पू. से प्रारम्भ हो गया था।''[6] परन्तु भारत के विभिन्न भागों में किये गये उत्खननों से यह पता नहीं चला कि यहाँ ई. पू. एक हजार में मुद्राओं का निर्माण होता था।

पी. गार्डनर के मतानुसार– सर्वप्रथम एशिया माइनर के जीडिया नामक स्थान में ई॰ पू॰ के मुद्राएं प्राप्त हुआ है जिन्हें 'इलेक्ट्रम' कहा गया है। मुद्राशास्त्रियों और विद्वतजनों के मतानुसार भारत में मुद्राओं का निर्माण आध–ऐतिहासिक काल के अन्त में हुआ। आध–ऐतिहासिक कहने का तात्पर्य छठी शती ईसवी पूर्व से है। मुद्राओं के निर्माण के साथ–साथ आदान–प्रदान के पूर्ववर्ती माध्यम भी चालु रहें।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित है कि उनके समय में भी वस्तुओं का आदान–प्रदान की प्रथा प्रचलित थी। लेकिन उस समय चांदी के आहत मुद्राओं का निर्माण बड़े स्तर में होने लगा था।

इस प्रकार यह कह सकते हैं कि ई॰पू॰ छठी शती के पूर्व भारत में मुद्राओं का अस्तित्व (वजूद) नहीं था। ई॰पू॰ छठी शती से हमारे देश भारत में मुद्राओं का प्रचलन प्रारंभ हुआ होगा। इसका प्रमाण पाणिनि का अष्टाध्यायी तथा प्राचीन बौद्ध साहित्य से होती है। उत्खन्न द्वारा मौर्यकाल के सबसे अधिक मुद्राएं विभिन्न–विभिन्न स्थानों पर मिली हैं।

प्राचीन ग्रंथकारों में पाणिनि, कौटिल्य, मनु और याज्ञवल्क्य ने मुद्राओं के बारे में विस्तृत रूप से लिखा है। पाणिनि ने चाँदी का कार्षापण (तौल 32 रत्ती) तथा ताम्र का कार्षापण (तौल 80 रत्ती) का वर्णन मिलता है। जातकों में भी कार्षापण का उल्लेख मिलता है। पुराण में कार्षापण को 'धरण' कहा गया है। कर्ष का अर्थ है निश्चित तौल तथा आपण का अर्थ है प्रयोग करना, अर्थात् निश्चित तौल का प्रयोग करना। कार्षापण को प्राकृत में "कहापण" कहा गया है। चांदी के मुद्राओं को "नील कहापण" भी कहा जाता था।[9]

प्राचीन समय में जिन खनन क्षेत्रों में जो धातु अधिक मात्रा में मिलती थी वहाँ उसी धातु को मुद्राओं के रूप में प्रयोग में लाते थे। उदाहरण स्वरूप मध्य प्रदेश के बालाघाट में तांबा सबसे अधिक मात्रा में मिलता था, आंध्र–प्रदेश में सीसा तथा मैसूर में सोना। इस समय मुद्राओं की निश्चित वजन पर बहुत ध्यान दिया जाता था। जो मुद्रा की प्रमाणिकता का श्रेष्ठ अवस्था थी।

मुद्राओं का विकास क्रम रूप

मुद्राओं का निर्माण होने पर सर्वाधिक लाभ व्यापारिक समुदाय को हुआ। उन्हें व्यापार में क्रय–विक्रय करने में अत्यन्त सुविधा हो गयी। आरंभ में आहत मुद्राएं स्थानीय और जनपदों ने चलाये थे बाद में मगध साम्राज्य, मौर्य साम्राज्य के सम्राटों ने सर्वत्र देश में बड़ी संख्या में आहत मुद्राओं को चलाया उस समय ताम्र की अपेक्षा रजत धातु की मुद्रा अधिक निर्माण किया गया, क्योंकि ईरान और मध्य एशिया से भारत में चाँदी आयात करके लाई जाती थी जो इस बात का पुष्टि मिलती है कि भारत के दूसरे देशों से व्यापारिक संबंध अच्छे थे।

इन मुद्राओं का निर्माण देश के प्रमुख नगरों में स्थित टकसालों में हुआ था। टकसाल घर के अधिकारी मुद्राओं के आकार प्रकार वजन तथा चिन्हों के अंकन का विशेष ध्यान दिया जाता था। इन मुद्राओं पर लेख नहीं अंकित किये जाते थे।

मौर्य साम्राज्य के बाद किसी बड़ी केन्द्रीय सत्ता का शासन नहीं था। अतः विभिन्न जनपदों, गणराज्यों आदि ने स्वतंत्र शासन किया तथा अपने मुद्राएं चलाये। कौशांबी, पंचाल, मथुरा, अयोध्या, विदिशा,एरण, उज्जयिनी, त्रिपुरी आदि जनपदों में स्वतंत्र शासकों के राज्य करने का पता चला है। उत्तर–पश्चिमी भारत में अनेक गणों ने भी अपने मुद्राऐं चलाये थे। उन पर गण का नाम एवं शासक का नाम अंकित हुआ है।

मुद्रा के रूप में विकास क्रम को दक्षिण भारत के तेलंगाना क्षेत्र में सातवाहनों राजवंश ने ई॰ पू॰ दूसरी शती से अपने मुद्राएं चलाये थे जो आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के बड़े भू–भाग में सातवाहनों के मुद्राएं प्राप्त हुये हैं।

भारत के उत्तर–पश्चिमी भू–भाग पर ई॰ पू॰ द्वितीय शती में विदेशी शासकों का अधिकार हो गया था। हिन्द–यूनानी शासकों ने लगभग 150 वर्षो तक भारत पर राज्य किया था। उसके बाद शक लोग अनेक शाखाओं में भारत आये। पह्लव राजाओं ने गंधार और पंजाब के क्षेत्रों पर अधिकार किया था। इसके बाद कुषाण साम्राज्य ने ई॰ पू॰ प्रथम शती से दूसरी ईसवी तक उत्तर भारत में मथुरा तक के क्षेत्रों पर राज्य किया। इन विदेशी शासकों ने भारत में अपने मुद्राएं चलाये थे जो उनके द्वारा चलाये गये मुद्राओं के कलात्मकता एवं भव्यता के विकास क्रम देखते हैं।

कुषाण राजवंश को उत्तर भारत से दूसरी शती ईसवी के मध्योत्तर काल में यौधेय, कुणिन्द आदि गणों और नाग वंश के शासकों ने पराजय किया। नाग राजाओं के द्वारा ताम्र धातु की मुद्राएं मिले हैं जो दूसरी–तीसरी

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शताब्दी ईसवी तक मथुरा से लेकर पद्मावती, कुतवार और विदिशा तक के क्षेत्रों पर अपना शासन किया था।

ईसवी तीसरी–चौथी शती में कुषाण राजा अनेक छोटी शाखाओं में विभक्त होकर भारत के उत्तर–पश्चिमी सीमान्त क्षेत्र में स्थापित हो गये थे। जो ईसवी चौथी शताब्दी में महान गुप्त राजवंश का उत्कर्ष होने पर इन गणों और राज्यों के मुद्राओं का स्वतंत्र रूप से प्रचलन समाप्त हो गया। कुषाण राजाओं ने भी गुप्त राजाओं का प्रभुत्व स्वीकार कर उनसे अपनी मैत्री सम्बन्ध बनाये।

गुप्त साम्राजय के मुद्राऐं चौथी से छठी शताब्दी ईसवी के मध्य काल तक प्रचलित रहे। भारत के उत्तर भारत के एक बड़े क्षेत्र पर गुप्त साम्राज्य का अधिकार था। गुप्त राजाओं ने सोना, चांदी और ताम्र धातुओं के मुद्राएं बनवाये थे। उनके द्वारा चलाये गये सोने की मुद्राओं में विविधता और कलात्मक रूप है जो अपने मुद्रा विकास क्रम की श्रेष्ठता प्रदर्शित करती है।

संस्थान में संग्रहीत आहत/पंचमार्कड/जनपद/महाजन/राज्य/गणराज्य/राजवं'ा/ साम्राज्य के मुद्राओं का रूपा चिन्ह का अध्ययन

मुद्रा – मगध जनपद, मुद्रा संख्या– 01

अग्रभाग **पृष्ठभाग**

चित्र सं.–01(स) **चित्र सं.–01(द)**

जनपद – मगध जनपद।
धातु – रजत/चाँदी।
वजन – 3.29 ग्राम, चित्र संख्या– 01(स)
आयाम – चित्र संख्या–01(द)
आकार – छः भुजा (षष्ठ भुज)।
विषय –

अग्रभाग

सूर्य, मछली टैंक, गज, षड़चक्र।

पृष्ठभाग

विषय का अभाव।

लिपि–आलेख।

अग्रभाग

लिपि–आलेख का अभाव।

पृष्ठभाग

लिपि–आलेख का अभाव।

संग्रह

शहज़ाद राय शोध संस्थान, बड़ौत, (उ.प्र.) भारत।

छवि–चित्रण–अभिजीत कुमार सिन्हा, शोध–छात्र, दिनांक–03.06.2016

कला तत्वों के आधार पर

अग्रभाग

छः भुजा के रजत धातु के मुद्रा पर स्पष्ट टंकन है। ये रूप–चिन्ह प्रतीक, सूर्य, मछली टैंक में, गज, "ाड़चक्र का चित्रण स्पष्ट रूप से टंकन है। अग्रभाग पर लिपि–आलेख अंकन का अभाव है। इस धातु मुद्रा का दो भाग (कोण) कटा हुआ है।

पृष्ठभाग

मुद्रा के पृष्ठभाग पर रूप–चिन्ह का प्रतीक और लिपि–आलेख अंकन का अभाव है।

मुद्रा – मगध जनपद, मुद्रा संख्या– 02

अग्रभाग **पृष्ठभाग**

चित्र सं.–02 (स) **चित्र सं.–02 (द)**

जनपद – मगध जनपद।
धातु – रजत/चाँदी।
वजन – **3.26** ग्राम, चित्र संख्या–02(स)
आयाम – चित्र संख्या–02(द)
आकार – वृत्ताकार (अपूर्ण) या अण्डाकार।
विषय –

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अग्रभाग

सूर्य, षडचक्र, डमरू, दो टऑरिन (Taurines बैल की तरह) के साथ बिंदीदार वृत्त का चित्रण।

पृष्ठभाग

पाँच ज्यामितीय प्रतीक या बैंक चिन्ह/साम्राज्य चिन्ह का चित्रण।

लिपि–आलेख

अग्रभाग–पृष्ठभाग में लिपि–आलेख अंकन का अभाव।

संग्रह– शहज+ाद राय शोध संस्थान, बड़ौत, (उ.प्र.) भारत।

छवि–चित्रण –अभिजीत कुमार सिन्हा, शोध–छात्र, दिनांक–03.06.2016

कला तत्वों के आधार पर

अग्रभाग

अण्डाकार, रजत धातु के मुद्रा पर स्पष्ट टंकन है। ये रूप–चिन्ह प्रतीक, सूर्य, षडचक्र, डमरू, दो टोरिन (Taurines बैल की तरह) के साथ बिंदीदार वृत्त का चित्रण स्पष्ट रूप से टंकन है। अग्रभाग पर लिपि–आलेख अंकन का अभाव है।

पृष्ठभाग

मुद्रा के पृष्ठभाग पर पाँच ज्यामितीय प्रतीक रूप–चिन्ह या बैंक चिन्ह प्रतीक/साम्राज्य चिन्ह प्रतीक है और इस धातु मुद्रा के पृष्ठभाग पर लिपि– आलेख अंकन का अभाव है।[11]

मुद्रा – पांचाल,मुद्रा संख्या– 03

अग्रभाग **पृष्ठभाग**

चित्र सं.–03 (स) **चित्र सं.–03 (द)**

राजवंश – पांचाल राजवंश, इन्द्रमित्र।
धातु – ताम्र।
वजन – **4.00** ग्राम, चित्र संख्या–03(स)
आयाम – चित्र संख्या–03(द)
आकार – वृत्ताकार।
विषय –

अग्रभाग

पुरुष आकृति व प्रतीक रूप–चिन्ह का चित्रण।

पृष्ठभाग

रूप–चिन्ह का अभाव।

लिपि–आलेख

अग्रभाग–लिपि–आलेख का अंकन अभाव।
पृष्ठभाग –ब्राह्मी लिपि–आलेख का अंकन।
संग्रह–शहज़ाद राय शोध संस्थान, बड़ौत, (उ.प्र.) भारत।
छवि–चित्रण– अभिजीत कुमार सिन्हा,शोध छात्र–दिनांक–06.06.2016

कला तत्त्वों के आधार पर पांचाल जनपद की मुद्राओं का अध्ययन

अग्रभाग

वृत्ताकार, ताम्र धातु के मुद्रा पुरुष आकृति (इन्द्र) जो मुद्रा के मध्य भाग में एक वर्गानुमा (पेडस्टल) आसन के ऊपर खड़े रूप में चित्रण किया गया है। जिनके मस्तक के ऊपर टोपी/मुकुट पहनें, दांया हाथ ऊपर और बांया हाथ कमर से स्पर्श करती और दोनों हाथों को स्पर्श करती धारण किये गये अंग–वस्त्र (दुपट्टा), व विश्राम अवस्था में खड़े (स्थानक) रूप का चित्रण स्पष्ट है। पूर्ण शरीर संरचना में **विद्रूप** (बौनापन) है।

विद्रूप चित्र Caricature

A Picture, description, or imitation of a person or thing in which certain striking characteristics are exaggerated in order to create a comic or grotesque effect.

किसी व्यक्ति या वस्तु की एक तस्वीर (चित्रण) वर्णन या नकल जिसमें कॉमिक या अजीब प्रभाव बनाने के लिए कुछ उनके विशेषताओं को अतिरंजित किया जाता है।

पृष्ठभाग

धातु की मुद्रा पर वर्गानुमा दाब का गहरा टंकन है प्रथम श्रेणी में पांचाल प्रतीक चिन्ह का चित्रण, द्वितीय श्रेणी में राजा का नाम (Idramitrasa) इ–दर–मी–तरी–सा का लिपि–आलेख का अंकन है ये लिपि–आलेख ब्राह्मी लेख है।

संस्थान में संग्रहीत कुणिंद गणों की रजत धातु की मुद्राएं–

मुद्रा – कुणिंद गण, मुद्रा संख्या– 04

अग्रभाग **पृष्ठभाग**

चित्र सं.–04 (स) चित्र सं.–04 (द)

राजवंश – कुणिंदगण राजवंश।
धातु – रजत।
वजन – **2.24** ग्राम, चित्र संख्या–04(स)
आयाम – चित्र संख्या–04(द)
आकार – वृत्ताकार।
विषय –
अग्रभाग

स्त्री, हिरण आकृति व प्रतीक रूप–चिन्ह का चित्रण।

पृष्ठभाग

प्रतीक रूप–चिन्ह का चित्रण।

लिपि आलेख

अग्रभाग–ब्राह्मी लिपि–आलेख का अंकन अभाव।
पृष्ठभाग–खरोष्ठी लिपि–आलेख का अंकन।
संग्रह–शहज़ाद राय शोध संस्थान, बड़ौत, (उ.प्र.) भारत।
छवि–चित्रण –अभिजीत कुमार सिन्हा, शोध–छात्र, दिनांक–07.06.2016

कुणिंद की मुद्रायें

कुणिंद गणों के अस्तित्व की जानकारी विभिन्न पुरातत्त्वीय विभाग के साक्ष्यों या दस्तावेजों के आधार पर तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व से द्वितीय शती ईसवी तक के वृहद् काल की जानकारी प्राप्त होती है।[10]

कुणिंद का वर्णन विष्णुपुराण, मार्केण्डय पुराण, वृहतसंहिता, महाभारत आदि साहित्य वर्णन किया गया है।[11]

व्यास व यमुना नदी की घाटियों के आस–पास कुणिंदो का राज्य माना जाता था।[12]

कुछ विद्वान इनका राज्य सतलज नदी के क्षेत्र (शिमला) में भी मानते हैं। इनकी मुद्राएं कांगड़ा, लुधियाना, अम्बाला, सहारनपुर, हमीरपुर, गढ़वाल, कुल्लु, अल्मोड़ा, काशीपुर आदि क्षेत्रों से प्राप्त होती हैं।

कुणिंद राजवंश की मुद्राएं एवं उन पर उत्कीर्ण लिपि–आलेख

वर्तमान समय में प्राप्त गणीय मुद्राओं का आंकलन यदि संख्या के आधार पर किया जाए तो कुणिंद गण की मुद्रा रजत धातु में अधिक प्राप्त हुई है। रजत मुद्रा के अतिरिक्त ताम्र धातु की मुद्राएं भी काफी संख्या प्राप्त हुई है। इन शासकों ने अपनी मुद्राओं पर ब्राह्मी व खरोष्ठी दोनों लिपियों का प्रयोग किया है। भारतीय लिपि के प्रयोग के साथ–साथ मुद्राओं पर जो चिन्ह अंकित हैं, वो भारतीय शैली के ही हैं। सामान्यतः माना जाता है इसकी बनावट शैली में, जो हिन्दु–यवन अनुकरण है, वह पश्चिम राज्यों के सुविधानुसार किया गया है।[13] कुणिंद शासकों की रजत मुद्रा शायद एक ही शासक द्वारा प्रवर्तित करायी गई। इस प्रकार की मुद्राओं पर **अमोधभूति** नामक शासक का नाम मिलता है। इतिहासकार अमोधभूति को पदवी की संज्ञा प्रदान करते हैं, किन्तु पूर्ण लेख स्पष्ट करता है कि यह राजा का ही नाम है। मुद्राओं के अग्रभाग पर वृत्ताकार में ब्राह्मी लिपि से अंकन **राज्ञः कुणीद्स अमोधभूतिस महरजस** अथवा **'राज्ञः कुणीदस्य अमोधभूतिस्य महरजस्य'** लेख स्पष्टता से पढ़ा जा सकता है।

कला तत्त्वों के आधार पर कुणिद राजवं'ा की मुद्राओं का अध्ययन

अग्रभाग

इन मुद्राओं पर सामने की ओर मुख किए हुए खड़गासन स्त्री का अंकन है, जिसका बाँया हाथ कमर पर व दाँयी हाथ में पुष्प व छत्रीनुमा अपने हाथ में पकड़े शांत आसन में दिख रहा है। उदर गोल, देह के विभिन्न अंगों के उतार–चढ़ाव का बँटवारा भारी सूचित करते हैं कि यह स्त्री की आकृति है। इसके कई अंग स्त्री–सौंदर्य की ओर संकेत करते हैं जैसे– पतली कमर, चौड़े जघने, दोनों पैरों में मोटे कड़े पहने हुए अंकन है। स्त्री के बराबर में हिरण का सजीवता पूर्ण चित्रण प्रभावशाली है। हिरण के ऊपर की ओर दोनों सींग के बीच में श्रीवात्स या (दो कोबरा) का शिल्पांकण है। स्त्री के साथ कमल, कुछ विद्वानों ने इस आकृति को कमलासीन होने के कारण देवी **'लक्ष्मी'** बतलाया है व एक चौकोर स्तूप का भी अंकन किया गया है।[15]

पृष्ठभाग

मुद्रा के पृष्ठभाग पर सुमेरु पर्वत, स्वास्तिक, नंदीपद, बोधिवृक्ष आदि चिन्हों का शिल्पाकंण वृत्ताकार में खरोष्ठी लिपि के प्रयोग के साथ किया गया है। पृष्ठभाग में खरोष्ठी लेख अग्रभाग के ब्राह्मी लिपि लेख का ही अनुवाद है। केन्द्र में छः धनुषात्मक सुमेरु पर्वत चतुर्थी में एक छतरीनुमा और नंदीपदा द्वारा उगता हुआ अंकन है। तीन या चार शाखाओं में दिरुग्ण (Diagonal) पत्तियाँ बोधिवृक्ष, ऊपर दाए स्वास्तिक व इन्द्रध्वजा (त्रिभुज का मानक) के नीचे लहराती रेखा का शिल्पांकन है। साथ ही वृत्ताकार में खरोष्टी लिपि में **राजा/राना कुणिदासा अमोधमूतिसा** (IV-VII O' Clock) के साथ **'महाराजास'** (V-VII O' Clock) लिखा है।[16]

निष्कर्ष

संग्रहालय में संग्रहीत प्राचीन मुद्राओं के आधार पर मैं अपने शोध कार्य को पूर्ण कर पाऊँगा। इन मुद्राओं का कलातत्त्वों के आधार पर अध्ययन कर शोध को नयी दिशा प्रदान करने में सहायक होगा। अतः मुझे आशा है कि मेरा यह शोध कलाजगत व अनुसंधानकर्ताओं के लिए भी मूल्यवान व ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा और इस शोध के माध्यम से भविष्य में इन अप्रकाशित मुद्राओं का प्रकाशन कलाजगत को लाभान्वित करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डा. एस. के. बाजपेयी, ऐतिहासिक भारतीय सिक्कें, पृ. सं.– 01–02*
2. *एल.पी.गुप्त., जर्नल आफ न्यूमिसमेटिक सोसायटी आफ इण्डिया, भाग –15/2,पृ.सं.–172–177*
3. *विधालोंर, प्राणनाथ., मुद्रा–शास्त्रपृ.सं.–10–11*
4. *डा. एस. के. बाजपेयी, ऐतिहासिक भारतीय सिक्कें, पृ. सं.–09–10*
5. *भण्डाकर, डी. आर., लेक्चर्स ऑन ऐश्यंट इंडियन न्यूमिस्मेटिक, 1921, पृ.सं.–62–68*
6. *चक्रवर्ती,कुमार सुरेन्द्र, ए स्टडी ऑफ ऐंश्यंट इंडियन न्यूमिस्मेटिक, पृ.सं.–25*
7. *वही, ऐतिहासिक भारतीय सिक्कें, पृ.सं.–10–11*
8. *कनिंघम, ए.(1891), कॉएन्स ऑफ ऐंश्यंट इंडिया फ्राम द अर्लियस्ट टाइम्स डाउन टु द सेवन्थ सेंचुरी ए.डी., वाराणसी, 1963, पृ.सं.–43*
9. *विधालंकर, सत्यकेतु, भारत प्राचीन इतिहास, पृ. सं.–345–347*
10. *एलन जॉन, कैटलॉग आफ द क्वायन्स ऑफ एन्सियेन्ट इण्डिया, पृ.सं.–143*
11. *राव, कुमार प्रदीप, प्राचीन भारतीय मुद्राएं पृ.सं.– 104*
12. *एलनजॉन, वही, पृ.सं.–104*
13. *राव, कुमार प्रदीप, वही, पृ.सं.–83*
14. *झा, अम्रतेश्वर भारतीय सिक्के (एक ऐतिहासिक परिचय) आई.आई.आर.एन.एस.प्रकाशन, नासिक, आई. स.बी.एन.–81–86786–14–7.*
15. *गुप्त, परमेश्वरी भारत के पूर्व कालीन सिक्कें विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।*
16. *Gupta, L.C.(1886), "Some Rare Kuninda Coins", JNSI, XLVIII, Page No.- 36-40.*
17. *Pieper Wilfried,(2013), Ancient India Coins Revisited,ISBN-978-0-9837652,Published by Classical Numismatic Group, Inc., PO Box 479, Lancaster, PA 17608-0479, Page No.-148-160.*
18. *Sharma, S.(2016), Imperial Punch-Marked Coins of Ancient India,ISBN- 132-978-817305546,Published by Aryan Books International, Pooja Apartment,4 B, Ansari Road, Dariya Ganj, New Delhi,110002, India.*
19. *Rajgor, D.(2017), Punch-Marked Coins of Early Historic India, ISBN- 978-8-190181228, Published by Reesh Books International, Opera House, Mumbai, Maharastra,400004,India.*
20. *Fishman, M.A. & Todd, J.I.(2018), The Silver Damma, ISBN-978-8193829103, Published by IIRNS Publication Pvt. Ltd., 507 Raheja Center 214, Nariman Point, Mumbai, Maharastra, 400021, India.*